भावलिंगी संत पूजा

गुरुदेव तपस्वी भावश्रमण हे भावलिंगी गुरु भाव नमन ।

हृदय वेदिका की प्रासुक भूमि पर सविनय आह्वानन्।।

देख लीजिये भाव विमलता नहीं द्रव्य कोई भारी।

आओ विराजो हृदयासन पर सदा रहूँगा आभारी।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं भावलिंगी संत श्री विमर्शसागराचार्यवर्य! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं भावलिंगी संत श्री विमर्शसागराचार्यवर्य! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं भावलिंगी संत श्री विमर्शसागराचार्यवर्य! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

तर्ज-कहाँ गये चक्री जिन जीता...

मेरे सद्गुरु अपने जैसी भाव विमलता दो। जल सी शीतल निर्मल परिणति हे गुरुवर करदो ।।

रत्नत्रय गुण का अनुरागी जल करता अर्पण। मेरे जन्म जरा रोगों का गुरुवर करो शमन ।।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं भावलिंगी संत श्री विमर्शसागराचार्यवर्य जन्मादि रोग विनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

अहो विभावों की अग्नि में निज को झुलसाया। वीतराग निज परिणतियों का भान न हो पाया।।

शीतल चंदन करता अर्पण सद्गुरु चरणों में। निज स्वभाव की शीतलता प्रगटे आचरणों में।।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं भावलिंगी संत श्री विमर्शसागराचार्यवर्य ! संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

पर की ममता में निज समता खोता आया हूँ । परभावों की वैतरणी में गोता खाया हूँ।

अहो स्वपद का अभिलाषी मैं विपदायें हर लो। अक्षत पूजा करता गुरुवर निज अक्षयपद दो।।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं भावलिंगी संत श्री विमर्शसागराचार्यवर्य अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

ब्रह्मविभव का स्वामी हूँ मैं नहीं जान पाया। मनोविकारों की परिणति में भव-भव भरमाया ।।

ब्रह्मविलासी हे गुणराशी सद्गुरु शरणा दो। पुष्प समर्पित करता हूँ मम कामभाव हरलो।।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं भावलिंगी संत श्री विमर्शसागराचार्यवर्य कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

अहो आत्मा की ध्रुव साता जब अनुभव आती।क्षुधावेदनी की पीड़ा पलभर में खो जाती।।

आत्मसुधारस-वेदी गुरुवर हमको भी वरदो ।अर्पित है नैवेद्य चरण में क्षुधारोग हरलो।।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं भावलिंगी संत श्री विमर्शसागराचार्यवर्य क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दर्शनमोह महातम भारी चेतन भरमाया।भेदज्ञान चेतन से तन का कभी न कर पाया।।

आप स्वपर परकाशक दीपक दीपक से पूजूँ।मोहविजेता हे गुरुवर! मैं मोह विजय करलूँ।।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं भावलिंगी संत श्री विमर्शसागराचार्यवर्य मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्मजेल में आतम भव-भव सजा भोगता है।जबकि निज स्वातन्त्र्य भाव की पूर्ण योग्यता है।।

कर्मनाश का संविधान गुरु आप बताते हैं। धूप चढ़ा हम कर्मनाश के भाव सजाते हैं।।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं भावलिंगी संत श्री विमर्शसागराचार्यवर्य अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्मों के फल भोग भोगकर भव-भव दुख पाया। फिर भी कर्मफलों में ही नित रतिभाव आया।।

कर्मफलों में आप सी समता हे गुरुवर पाऊँ।फल से अर्चा करके मैं निजगुण के फल चाहूँ।।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागराचार्यवर्य मोक्षफल प्राप्तये फलं निःस्वाहा।

अहो त्रिकाली निज स्वभाव की ध्रुव अनर्घ सत्ता।भूल उसे मैं पर्यायों का मूल्य किया करता ।।

निज अनर्घ्य सत्ता का गुरुवर बोध कराया है। निज अनर्घ्यता प्रगटाने यह अर्घ्य चढ़ाया है।।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं भावलिंगी संत श्री विमर्शसागराचार्यवर्य अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

अर्हतों का शासन गुरुवर तुमने जग में जयवंत किया।

जो अजर अमर अविनाशी है, वो एक जिनागम पंथ दिया ।।1।।

हे भावलिंगी निग्रंथ कवि, क्या तेरी गुण महिमा गायें।

सूरज के आगे कैसे हम, यह टिम टिम दीपक दिखलायें।।2।।

तप से मण्डित आभामण्डल, सब मंगल करने वाला है।

जग की सारी विपदाओं को क्षण भर में हरने वाला है ।।३।।

हे धर्म निकेतन ब्रह्मनिष्ठ, आचार्य रत्न जय हो तेरी ।

मंगल स्वरूप हे आत्मगुप्त हे गुणनिधीश जय हो तेरी ।।4।।

तन है कोमल तप है भारी, महिमा अगम्य अतिशयकारी।

हे श्रेयपथिक उपकारों के हम भक्त सभी हैं आभारी ।।5।।

शाश्वत सुख के उपदेशक हो, चर्या अरिहंतों सी पावन ।

वचनों से अमृत झरता है, मानो ज्यों बरस रहा सावन ।।6।।

हे मुक्ति दूत! हे मुक्तिमार्ग! हे मुक्ति पंथ के महापथिक।

हे श्रमणेश्वर, हे श्रमण श्रेष्ठ हे श्रमण मार्ग के महाश्रमिक ।।7।।

अद्भुत तप त्याग साधना है अनुपम है दिव्य छटा प्यारी।

पग-पग धरती को तीरथ सम पावनता देते हो भारी ।।8।।

हो चेतन तीर्थ सृजेता तुम, गुण रत्नाकर चारित्ररथी।

हे श्रुत संवर्धक! तेजवंत, चारित्र सुधाकर दिव्यमति ।।9।।

अद्भुत साहित्य सृजन तेरा, सूरीवरेण्य हे महामुनि ।

हे आत्महवी! कर ध्यान अनल दिन रात रमाते हो धूनी ।।10।।

न तन पर कोई लिवास लिये मन में मुक्ति की आश लिये।

बन गये दिगम्बर योगी तुम, अम्बर आडम्बर त्याग दिये ।।11।।

तन में तप तेज दिवाकर सा, शशि सम शीतल गुरु की वाणी।

मन में अरिहंतों की महिमा, और कंठ वसी माँ जिनवाणी।।12।।

परिषह उपसर्गों के पथ पर, समता का नीर बहाते हो।

भक्तों के श्रद्धा मंदिर के गुरु तुम ही वीर कहाते हो।।13।।

महिमा 'विचिन्त्य' सुनकर तेरी आया हूँ गुरुवर चरणों में।

मम श्रद्धा में निर्मलता दो पावनता दो आचरणों में ।।14।।

ॐ ह्रूं भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर महामुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भावलिंगी संत गुरु विमर्श सिंधु पद नमें।

वे घोर इस संसार के भ्रमजाल में फिर न भ्रमें।

रत्नत्रयामृत गुरु कृपा से वे सहज ही पान कर।

मुक्तिपुरी में जा बसें अज्ञानतम की हान कर ।।

।। परिपुष्पांजलि क्षिपामि ।।

गुरु मंत्र

संकट मोचन तारण हारे, गुरु विमर्श की जय जय जय